'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Special Issue I– Emerging Trends & Issues in Research & Development
Global Impact Factor – 0.565 (2014) & 0.676 (2015)
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March- 2016

संशोधन के नवीन आयाम - 'हाइकु काव्य कला के संदर्भ में'

डॉ.शैलजा जायसवाल
हिन्दी विभाग
म. गाँ. वि. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड (जि.नाशिक)

प्रस्तावना :-

किसी भी विधा में जनमानस तक पहुँचाने के लिए, उसे लोकप्रिय एवं प्रयोजनशील बनाने के लिए, संशोधन की आवश्यकता होती है । संशोधन, शोधकार्य, अनुसंधान प्रणालि द्वारा ही साहित्य का विकास होता है। साहित्य की प्रासंगिकता के विस्तार के लिए विश्वविद्यालयों में संशोधन कार्य सपंन्न होते है । विश्व साहित्य, भारतीय साहित्य एवं हिन्दी साहित्य में हाइकु काव्य कला का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है । हाइकु लेखन की परपंरा दिनो-दिन प्रगति की ओर अग्रेसर है ।

हाइकु की उत्पत्ति तथा उद्‌भव :-

भारतीय साहित्यशास्त्र में विशुद्ध अनुभूतियों और सूक्ष्म संवेगों को 'ब्रम्हानंद सहोदर' कहा गया है । अनुभूतियों का विशुद्ध क्षण काव्य सृजन के लिए अनिवार्य होता है । यही क्षणिक अनुभूति की अनुगूंज हमारी चेतना को स्पंदित करती है, यह अनुभूतियों के स्पंदन को शब्दबद्ध करना हाइकु कविता है । हाइकु काव्य कला का जन्म जापान में हुआ, शनैः शनैः यह काव्य छंद अपनी मौलिक काव्य गत विशेषताओं के कारण विश्वरभर में लोकप्रिय हो गया । प्रसिद्ध हाइकुकार यशुदा मे इसे एक श्वासी काव्य (One Breath Poem) कहा है ।

जापान का आरम्भिक साहित्येहास 'यमातो' आर 'नारा' युग नाम से प्रसिद्ध है । विश्व में और हिन्दी बोलने वालो की संख्या सबसे अधिक है । चीनी भाषा का प्रभाव जापानी भाषा पर पड़ा है । जापान की कई धार्मिक पुस्तके चीनी भाषा में प्राप्त होती है । लेकिन विद्वानों में इस बात का मतभेद है कि जापान के पास अपनी कोई लिपि नहीं थी, अर्थात लिपि से वंचित था । यह कविताएँ ५ और ७ अक्षरों वाले पजों के बदलते क्रम में है जिन्हें 'वाका' कहते है । वाका कविताओं के ताँका और चौका नामक दो काव्य रुप है। ताँका छोटी कविता थी जिसमें ३१ अक्षर, ५, ७, ५, ७, ७ के क्रम में लिखी जाती थी । चोका लम्बी कविता थी। कालान्तर में 'ताँका' काव्य रुप हाइकु काव्य में परिवर्तित हो गया ।

'हाइकु' शब्द की उत्पत्ति जापानी भाषा के 'होक्कू' शब्द से हुई है । होक्कु शब्द होत्सु तथा कु मिलकर बना है। जिसमें होत्सु का अर्थ 'प्रारम्भिक' है और 'कू' का अर्थ खण्ड है । इस प्रकार होक्कू का अर्थ 'प्रारम्भिक खण्डकाव्य' हुआ है ।

प्रारम्भिक खंण्डकाव्य का संबंध जापानी की प्रारम्भिक कविता 'ताँका' से है । धीरे धीरे ३१ अक्षर की ताँका कविता का स्वरुप बदल कर ५, ७, ५ क्रम वाली १७ अक्षर वाली हाइकु में हुआ । प्रारम्भिक कविता ३१ अक्षरों से

मुक्त होकर १७ अक्षर वाली हाइकु काव्य कहलायी । भाषा और काव्य का यह लघु छन्ग लधु रुप संपूर्ण विश्व की काव्य विद्या धन बई ।

जापान की यह काव्य-विद्या अपनें गुणात्मक और ध्वन्यात्मक रुप के कारण विश्व में लोकप्रिय हो है। आज विश्व की सभी भाषाओं में हाइकु धन्द का प्रयोग हो रहा है ।

हाइकुकारों के विचार एवं स्वरुप :-

जापानी कवि बाशो ने हाइकु पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि - "हाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति है । हाइकु संपूर्ण कविता नहीं है, वह विराट सत्य की ओर इंगित करनेवाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है । "हिन्दी और जापानी भाषआ के विद्वान डॉ. सत्यभूषण वर्मा ने इसे "शब्द की साधना का माध्यम बताया है ।"

कवि रविंद्रनाथ ठाकुर कहते है कि - "तीन पंक्तियों की यह कविता संसार में और कहीं नहीं है । यह तीन पंक्तियाँ कवि और पाठक दोनों के लिए यथेष्ट है । कवि का हृदय झरने के जल की तरह शब्द नहीं करता, सरोवर के जल की भाँति शांत रहता है ।

हाइकु काव्य कला में सूक्ष्म भावानुभूति का अत्यंत महत्त्व होता है । हाइकु कविता अपनी लघुता के वैशिष्ट्य से पाठक को यथार्थ लोक में ले जाकर आनंद प्रदान कर रही है । हाइकु काव्य शैली जापान के प्राचीनतम काव्य-संकलन 'मान्योशु' से चली आ रही है ।

हिन्दी साहित्य में हाइकु काव्य :-

भारतीय साहित्य में हाइकु काव्य की अवधारणा कविंद्र रविंद्र से, उनके जापान यात्रा से लौटने के बाद आई। अपनी रचना 'जापानी यात्रा' बंदला साहित्य में सन १९१६ में प्रकाशित हुआ था जिसमें हाइकु काव्य की झलक अथवा परिचय प्राप्त हुआ था । हिन्दी साहित्य में हाइकु के प्रवर्तक के रुप में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रयोगवादी कविता के प्रर्वतक सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन 'अज्ञेय' जी को माना जाता है । अज्ञेय अपने समस्त दार्शनिक वित्रण को हाइकु छन्द में व्यक्त किया है । सन १९५६ में 'हरी ओ करुणा प्रभामय' में हाइकु का उल्लेख मिलता है । उदा -

बड़ी लम्बी राह
नये कवि से
इशारे जिंदगी के
रश्मि बाण

अज्ञेय की समस्त रचनाएँ हाइकु की कोटि में नहीं आती, बल्कि हाइकु की शैली में लिखी रचनाएँ कही जा सकती है । आइकु काव्य के प्रभाव को अज्ञेय को ने स्वयं स्वीकार किया है । अज हाइकु काव्य के प्रभाव में अपना स्थान बना चुका है । हाइकुकारों की संख्या में दिनोदिन वृद्धि हो रही है ।

कमलेश बट्ट कमल की दो रचनाएँ १९९९ और २००६ में प्रकाशित हो चुकी है । भारतीय साहित्य में आज २५० से ३०० की संख्या में पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है । आकाशवाणी साहित्य पर कार्यक्रम प्रसारित हो चुके है । आकाशवाणी गोरखपुर से समय-समय पर हाइकु साहित्य प्रसारित हो चुके है । ९ मई २०१२ को दुरदर्शन पर 'पत्रिका' कार्यक्रम में हाइकु क्लब, इंटरनेट पर हाइकु पाठशालाएँ खुल चुकी है । हाइकु को अभी और शिल्पगत अनुसंधात्मक दृष्टि की आवश्यकता है । हाइकु के उज्ज्वलभविष्य के लिए भावगत ही नहीं बल्कि शिल्पगत विकास की आवश्यकता है । हाइकु कला हिन्दी साहित्य में कला के क्षेत्र में बढ़ता चरण है । हाइकु को अध्ययन अध्यापन में प्रवेश की आवश्यकता है । हाइकु का यह विकास काल है । अभिण्यासापस्त की दृष्टि से हाइकु नित नवीन प्रयोग हो रहे है । हिन्दी के डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, उर्मिला कौल, डॉ.करुणेश प्रकाश भट, डॉ.विद्याबिनु सिंह, डॉ.सुधा गुप्ता, डॉ.रमेश कुमार त्रिपाठी, डॉ.कमल किशोर गोयनका आदि प्रमुख हाइकुकार है जिनका लेखन सशक्त, आकर्षक और सहज है । इस तरह हाइकु कला मन मस्तिष्क की संवेदनाओं, चेतनाओं और अनुभूतियों को झकझोरने वाली काव्य कला है ।

संदर्भ सूची -

१. पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में डॉ.क्रांति मुदिराज का व्याख्यान.
२. अज्ञेय का काव्य : भाव एवं शिल्प - डॉ.शंकर वसंत मृद.
३. अनुभूति - उर्मिला कौल
४. जापानी हाइकु और हिन्दी कविता - डॉ.सत्यभुषण वर्मा
५. हिन्दी तथा जापानी हाइकु का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ.करुणेश प्रकाश भट